रहता है। परन्तु भौतिक प्रकृति के नियमानुसार, ब्रह्मा और ब्रह्मलोक के सारे निवासियों की भी यथासमय मृत्यु हो जाती है।

अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे।
रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्त संज्ञके।।१८।।

अव्यक्तात्=अव्यक्त से; **व्यक्तयः**=जीवात्मा; **सर्वाः**=सब; **प्रभवन्ति**=प्रकट होते हैं; **अहः आगमे**=दिन के प्रवेशकाल में; **रात्रि आगमे**=रात्रि के आने पर; **प्रलीयन्ते**=विलीन हो जाते हैं; **तत्र**=उस; **एव**=ही; **अव्यक्त**=अप्रकट; **संज्ञके**=कहे जाने वाले में।

अनुवाद

ब्रह्मा के दिन के आने पर यह जीव-समूह अव्यक्त से प्रकट होता है और ब्रह्मा की रात्रि का आगमन होने पर फिर उसी में लय हो जाता है।।१८।।

तात्पर्य

अल्पज्ञ जीव इसी संसार में रहने के लिये यत्न किया करते हैं; फलस्वरूप नाना लोकों में उनका क्रमशः उत्थान-पतन होता रहता है। वे ब्रह्मा के दिन में अपने कार्य-कलापों को प्रकट करते हैं और ब्रह्मा की रात्रि का आगमन होने पर पुनः अव्यक्त में उनका विलय हो जाता है। ब्रह्मा के दिन में उन्हें विविध कलेवरों की प्राप्ति होती है और रात्रि होने पर ये कलेवर नष्ट हो जाते हैं। इस समय जीव श्रीविष्णु के वपु में रहते हैं। ब्रह्मा के दिवस की आवृत्ति के साथ वे फिर अभिव्यक्त हुआ करते हैं। ब्रह्मा के जीवन-काल की समाप्ति होने पर वे सभी विलीन होकर करोड़ों वर्ष तक अव्यक्त रहते हैं। फिर अगले युग में ब्रह्मा का पुनर्जन्म होता है और वे भी फिर से व्यक्त होते हैं। इस प्रकार जीव प्राकृत-जगत् में बद्ध बना रहता है। परन्तु जो सुधीजन कृष्णभावनामृत को अंगीकार कर भक्तियोग के साथ **हरे कृष्ण हरे राम** कीर्तन करते हैं, वे इसी जीवन में श्रीकृष्ण के दिव्य धाम में प्रवेश करके पुनर्जन्म से रहित सच्चिदानन्दमय जीवन को प्राप्त कर लेते हैं।

भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते।
रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे।।१९।।

भूतग्रामः=चराचर जीवों का समूह; **सः एव**=वही; **अयम्**=यह; **भूत्वा भूत्वा**=बारम्बार उत्पन्न होकर; **प्रलीयते**=लय होता है; **रात्रि**=रात्रि के; **आगमे**=आने पर; **अवशः**=कर्म के आधीन हुआ; **पार्थ**=हे पृथापुत्र; **प्रभवति**=व्यक्त होता है; **अहः**=दिन के; **आगमे**=उपस्थित होने पर।

अनुवाद

वही यह जीव-समुदाय प्रकट हो-होकर रात्रि के आने पर लय होता है और दिन के आने पर कर्म के वश हुआ फिर व्यक्त होता है।।१९।।